Luk

Chapter 10

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1

Μετὰ	δὲ	ταῦτα,	ἀνέδειξεν	ὁ	Κύριος	‹καὶ›	ἑτέρους	ἑβδομήκοντα	‹δύο›,
बाद	तो	इन–बातों–के	नियुक्त–किया	–ने	प्रभु	और	अन्य	सत्तर	दो
G3326	G1161	G3778	G0322	G3588	G2962	G2532	G2087	G1440	G1417

καὶ	ἀπέστειλεν	αὐτοὺς	ἀνὰ	δύο	‹δύο›	πρὸ	προσώπου	αὐτοῦ,	εἰς	πᾶσαν
और	भेजा	उन्हें	करके	दो	दो	आगे	मुख–के	अपने	में	हर
G2532	G0649	G0846	G0303	G1417	G1417	G4253	G4383	G0846	G1519	G3956

πόλιν	καὶ	τόπον	οὗ	ἤμελλεν	αὐτὸς	ἔρχεσθαι.
नगर	और	स्थान	जहाँ	जाने–वाला–था	वह–स्वयं	आने–को
G4172	G2532	G5117	G3739	G3195	G0846	G2064

> इन घटनाओं के बाद प्रभु ने बहत्तर शिष्यों को और नियुक्त किया और फिर जिन-जिन नगरों और स्थानों पर उसे स्वयं जाना था, दो-दो करके उसने उन्हें अपने से आगे भेजा।

2

ἔλεγεν	δὲ	πρὸς	αὐτούς,	Ὁ	μὲν	θερισμὸς	πολύς;	οἱ	δὲ	ἐργάται
कहा	तो	से	उन	–	वास्तव–में	फसल	बहुत	–	परन्तु	काम–करने–वाले
G3004	G1161	G4314	G0846	G3588	G3303	G2326	G4183	G3588	G1161	G2040

ὀλίγοι.	δεήθητε	οὖν	τοῦ	Κυρίου	τοῦ	θερισμοῦ,	ὅπως	ἐργάτας	ἐκβάλῃ
थोड़े	विनती–करो	इसलिए	–से	प्रभु	–की	फसल–के	कि	काम–करने–वालों–को	भेज–दे
G3641	G1189	G3767	G3588	G2962	G3588	G2326	G3704	G2040	G1544

εἰς	τὸν	θερισμὸν	αὐτοῦ.
में	–	फसल	अपनी
G1519	G3588	G2326	G0846

> वह उनसे बोला, “फसल बहुत व्यापक है किन्तु, काम करने वाले मज़दूर कम है। इसलिए फसल के प्रभु से विनती करो कि वह अपनी फसलों में मज़दूर भेजे।

3

ὑπάγετε;	ἰδοὺ,	ἀποστέλλω	ὑμᾶς	ὡς	ἄρνας	ἐν	μέσῳ	λύκων.
जाओ	देखो	भेजता–हूँ	तुम्हें	जैसे	मेमनों–को	में	बीच	भेड़ियों–के
G5217	G3708	G0649	G4771	G5613	G0704	G1722	G3319	G3074

> “जाओ और याद रखो, मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच भेड़ के मेमनों के समान भेज रहा हूँ।

4

μὴ	βαστάζετε	βαλλάντιον,	μὴ	πήραν,	μὴ	ὑποδήματα;	καὶ	μηδένα	κατὰ
न	लेकर–चलो	थैली	न	झोली	न	जूते	और	किसी–को	में
G3361	G0941	G0905	G3361	G4082	G3361	G5266	G2532	G3367	G2596

τὴν	ὁδὸν	ἀσπάσησθε.
–	मार्ग	नमस्कार–करो
G3588	G3598	G0782

> अपने साथ न कोई बटुआ, न थैला और न ही जूते लेना। रास्ते में किसी से नमस्कार तक मत करो।

5

εἰς	ἣν	δ’	ἂν	εἰσέλθητε	οἰκίαν,	πρῶτον	λέγετε	Εἰρήνη	τῷ	οἴκῳ
में	जिस	भी	कभी	प्रवेश–करो	घर	पहले	कहो	शान्ति	–को	घर
G1519	G3739	G1161	G0302	G1525	G3614	G4412	G3004	G1515	G3588	G3624

τούτῳ.
इस
G3778

> जिस किसी घर में जाओ, सबसे पहले कहो, ‘इस घर को शान्ति मिले।’

6	καὶ	ἐὰν	ἐκεῖ	ᾖ	υἱὸς	εἰρήνης,	ἐπαναπαήσεται	ἐπ’	αὐτὸν	ἡ	εἰρήνη
	और	यदि	वहाँ	हो	पुत्र	शान्ति–का	ठहरेगी	पर	उस	–	शान्ति
	G2532	G1437	G1563	G1510	G5207	G1515	G1879	G1909	G0846	G3588	G1515

ὑμῶν;	εἰ	δὲ	μή¦γε,	ἐφ’	ὑμᾶς	ἀνακάμψει.
तुम्हारी	यदि	परन्तु	नहीं	पर	तुम्हारे–पास	लौट–आएगी
G4771	G1487	G1161	G1490	G1909	G4771	G0344

> यदि वहाँ कोई शान्तिपूर्ण व्यक्ति होगा तो तुम्हारी शान्ति उसे प्राप्त होगी। किन्तु यदि वह व्यक्ति शान्तिपूर्ण नहीं होगा तो तुम्हारी शान्ति तुम्हारे पास लौट आयेगी।

7	ἐν	αὐτῇ	δὲ	τῇ	οἰκίᾳ	μένετε,	ἐσθίοντες	καὶ	πίνοντες	τὰ	παρ’	αὐτῶν;
	में	उसी	तो	–	घर	ठहरो	खाते–हुए	और	पीते–हुए	–	से	उन
	G1722	G0846	G1161	G3588	G3614	G3306	G2068	G2532	G4095	G3588	G3844	G0846

ἄξιος	γὰρ	ὁ	ἐργάτης	τοῦ	μισθοῦ	αὐτοῦ.	μὴ	μεταβαίνετε	ἐξ	οἰκίας
योग्य	क्योंकि	–	काम–करने–वाला	–की	मजदूरी	अपनी	न	जाओ–इधर–उधर	से	घर
G0514	G1063	G3588	G2040	G3588	G3408	G0846	G3361	G3327	G1537	G3614

εἰς	οἰκίαν.
में	घर
G1519	G3614

> जो कुछ वे लोग तुम्हें दें, उसे खाते पीते उसी घर में ठहरो। क्योंकि मज़दूरी पर मज़दूर का हक है। घर-घर मत फिरते रहो।

8	καὶ	εἰς	ἣν	ἂν	πόλιν	εἰσέρχησθε,	καὶ	δέχωνται	ὑμᾶς,	ἐσθίετε	τὰ
	और	में	जिस	कभी	नगर	प्रवेश–करो	और	ग्रहण–करें	तुम्हें	खाओ	–
	G2532	G1519	G3739	G0302	G4172	G1525	G2532	G1209	G4771	G2068	G3588

παρατιθέμενα	ὑμῖν.
परोसी–गई–वस्तुएँ	तुम्हें
G3908	G4771

> “और जब कभी तुम किसी नगर में प्रवेश करो और उस नगर के लोग तुम्हारा स्वागत सत्कार करें तो जो कुछ वे तुम्हारे सामने परोसें बस वही खाओ।

9	καὶ	θεραπεύετε	τοὺς	ἐν	αὐτῇ	ἀσθενεῖς,	καὶ	λέγετε	αὐτοῖς,	Ἤγγικεν	ἐφ’
	और	चंगा–करो	–	में	उस	बीमारों–को	और	कहो	उनसे	पास–आया–है	पर
	G2532	G2323	G3588	G1722	G0846	G0772	G2532	G3004	G0846	G1448	G1909

ὑμᾶς	ἡ	βασιλεία	τοῦ	Θεοῦ.
तुम	–	राज्य	–का	परमेश्वर
G4771	G3588	G0932	G3588	G2316

> उस नगर के रोगियों को निरोग करो और उनसे कहो, ‘परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुँचा है।’

10	εἰς	ἣν	δ’	ἂν	πόλιν	εἰσέλθητε,	καὶ	μὴ	δέχωνται	ὑμᾶς,	ἐξελθόντες
	में	जिस	भी	कभी	नगर	प्रवेश–करो	और	न	ग्रहण–करें	तुम्हें	निकलकर
	G1519	G3739	G1161	G0302	G4172	G1525	G2532	G3361	G1209	G4771	G1831

εἰς	τὰς	πλατείας	αὐτῆς,	εἴπατε,
में	–	चौकों	उसके	कहो
G1519	G3588	G4113	G0846	G3004

> “और जब कभी तुम किसी ऐसे नगर में जाओ जहाँ के लोग तुम्हारा सम्मान न करें, तो वहाँ की गलियों में जा कर कहो,

11 Καὶ τὸν κονιορτὸν, τὸν κολληθέντα ἡμῖν ἐκ τῆς πόλεως ὑμῶν εἰς
और – धूल – लगी-हुई हमें से – नगर तुम्हारे पर
G2532 G3588 G2868 G3588 G2853 G1473 G1537 G3588 G4172 G4771 G1519

τοὺς πόδας, ἀπομασσόμεθα ὑμῖν; πλὴν τοῦτο γινώσκετε, ὅτι ἤγγικεν ἡ
– पैरों पोंछ-डालते-हैं तुम्हारे-विरुद्ध फिर-भी यह जान-लो कि पास-आया-है –
G3588 G4228 G0631 G4771 G4133 G3778 G1097 G3754 G1448 G3588

βασιλεία τοῦ Θεοῦ.
राज्य -का परमेश्वर
G0932 G3588 G2316

> ‘इस नगर की वह धूल तक जो हमारे पैरों में लगी है, हम तुम्हारे विरोध में यहीं पीछे जा रहे है। फिर भी यह ध्यान रहे कि परमेश्वर का राज्य निकट आ पहुँचा है।’

12 λέγω ὑμῖν, ὅτι Σοδόμοις ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ἀνεκτότερον ἔσται ἢ
कहता-हूँ तुमसे कि सदोम-के-लिए में – दिन उस अधिक-सहने-योग्य होगा से
G3004 G4771 G3754 G4670 G1722 G3588 G2250 G1565 G0414 G1510 G2228

τῇ πόλει ἐκείνῃ.
– नगर उस
G3588 G4172 G1565

> मैं तुमसे कहता हूँ कि उस दिन उस नगर के लोगों से सदोम के लोगों की दशा कहीं अच्छी होगी।

13 Οὐαί σοι, Χοραζίν! οὐαί σοι, Βηθσαϊδά! ὅτι εἰ ἐν Τύρῳ καὶ Σιδῶνι
हाय तुझ-पर खुराज़ीन हाय तुझ-पर बैतसैदा क्योंकि यदि में सूर और सीदोन
G3759 G4771 G5523 G3759 G4771 G0966 G3754 G1487 G1722 G5184 G2532 G4605

ἐγενήθησαν αἱ δυνάμεις, αἱ γενόμεναι ἐν ὑμῖν, πάλαι ἂν ἐν
होते – सामर्थ्य-के-काम – हुए में तुम बहुत-पहले ही में
G1096 G3588 G1411 G3588 G1096 G1722 G4771 G3819 G0302 G1722

σάκκῳ καὶ σποδῷ καθήμενοι, μετενόησαν.
टाट और राख बैठकर मन-फिराते
G4526 G2532 G4700 G2521 G3340

> “ओ खुराजीन, ओ बैतसैदा, तुम्हें धिक्कार है, क्योंकि जो आश्चर्यकर्म तुममें किये गए, यदि उन्हें सूर और सैदा में किया जाता, तो न जाने वे कब के टाट के शोक-वस्त्र धारण कर और राख में बैठ कर मन फिरा लेते।

14 πλὴν Τύρῳ καὶ Σιδῶνι, ἀνεκτότερον ἔσται ἐν τῇ κρίσει ἢ ὑμῖν.
फिर-भी सूर और सीदोन-के-लिए अधिक-सहने-योग्य होगा में – न्याय से तुम्हारे-लिए
G4133 G5184 G2532 G4605 G0414 G1510 G1722 G3588 G2920 G2228 G4771

> कुछ भी हो न्याय के दिन सूर और सैदा की स्थिति तुमसे कहीं अच्छी होगी।

15 καὶ σύ, Καφαρναούμ, μὴ ἕως οὐρανοῦ ὑψωθήσῃ, ἕως τοῦ ᾅδου
और तू कफरनहूम क्या तक स्वर्ग ऊँचा-किया-जाएगा तक – अधोलोक
G2532 G4771 G2584 G3361 G2193 G3772 G5312 G2193 G3588 G0086

καταβήσῃ.
उतारा-जाएगा
G2597

> अरे कफ़रनहूम क्या तू स्वर्ग तक ऊँचा उठाया जायेगा? तू तो नीचे नरक में पड़ेगा!

16	Ὁ	ἀκούων	ὑμῶν,	ἐμοῦ	ἀκούει;	καὶ	ὁ	ἀθετῶν	ὑμᾶς,	ἐμὲ
	–	सुनने-वाला	तुम्हारी	मेरी	सुनता-है	और	–	तुच्छ-जानने-वाला	तुम्हें	मुझे
	G3588	G0191	G4771	G1473	G0191	G2532	G3588	G0114	G4771	G1473

ἀθετεῖ;	ὁ	δὲ	ἐμὲ	ἀθετῶν,	ἀθετεῖ	τὸν	ἀποστείλαντά	με.
तुच्छ-जानता-है	–	और	मुझे	तुच्छ-जानने-वाला	तुच्छ-जानता-है	-को	भेजने-वाले	मुझे
G0114	G3588	G1161	G1473	G0114	G0114	G3588	G0649	G1473

> “शिष्यों! तो कोई तुम्हें सुनता है, मुझे सुनता है, और जो तुम्हारा निषेध करता है, वह मेरा निषेध करता है। और जो मुझे नकारता है, वह उसे नकारता है जिसने मुझे भेजा है।”

17	Ὑπέστρεψαν	δὲ	οἱ	ἑβδομήκοντα	‹δύο›	μετὰ	χαρᾶς,	λέγοντες,	Κύριε,	καὶ
	लौट-आए	तो	वे	सत्तर	दो	साथ	आनन्द-के	कहते-हुए	प्रभु	भी
	G5290	G1161	G3588	G1440	G1417	G3326	G5479	G3004	G2962	G2532

τὰ	δαιμόνια	ὑποτάσσεται	ἡμῖν,	ἐν	τῷ	ὀνόματί	σου.
–	दुष्टात्माएँ	अधीन-होती-हैं	हमारे	में	–	नाम	तेरे
G3588	G1140	G5293	G1473	G1722	G3588	G3686	G4771

> फिर वे बहत्तर आनन्द के साथ वापस लौटे और बोले, “हे प्रभु, दुष्टात्माएँ तक तेरे नाम में हमारी आज्ञा मानती हैं!”

18	εἶπεν	δὲ	αὐτοῖς,	Ἐθεώρουν	τὸν	Σατανᾶν	ὡς	ἀστραπὴν	ἐκ	τοῦ
	कहा	तो	उनसे	देखता-था	-को	शैतान	की-तरह	बिजली	से	–
	G3004	G1161	G0846	G2334	G3588	G4567	G5613	G0796	G1537	G3588

οὐρανοῦ	πεσόντα.
आकाश	गिरते-हुए
G3772	G4098

> इस पर यीशु ने उनसे कहा, “मैंने शैतान को आकाश से बिजली के समान गिरते देखा है।

19	ἰδοὺ,	δέδωκα	ὑμῖν	τὴν	ἐξουσίαν	τοῦ	πατεῖν	ἐπάνω	ὄφεων	καὶ	σκορπίων,
	देखो	दिया-है	तुम्हें	–	अधिकार	-का	रौंदने	ऊपर	साँपों	और	बिच्छुओं-के
	G3708	G1325	G4771	G3588	G1849	G3588	G3961	G1883	G3789	G2532	G4651

καὶ	ἐπὶ	πᾶσαν	τὴν	δύναμιν	τοῦ	ἐχθροῦ,	καὶ	οὐδὲν	ὑμᾶς	οὐ	μὴ
और	पर	सारी	–	शक्ति	-की	शत्रु	और	कुछ-भी	तुम्हें	कदापि	नहीं
G2532	G1909	G3956	G3588	G1411	G3588	G2190	G2532	G3762	G4771	G3756	G3361

ἀδικήσῃ.
हानि-पहुँचाएगा
G0091

> सुनो! साँपों और बिच्छुओं को पैरों तले रौंदने और शत्रु की समूची शक्ति पर प्रभावी होने का सामर्थ्य मैंने तुम्हें दे दिया है। तुम्हें कोई कुछ हानि नहीं पहुँचा पायेगा।

20	πλὴν	ἐν	τούτῳ	μὴ	χαίρετε,	ὅτι	τὰ	πνεύματα	ὑμῖν	ὑποτάσσεται;
	फिर-भी	में	इस	न	आनन्द-करो	कि	–	आत्माएँ	तुम्हारे	अधीन-होती-हैं
	G4133	G1722	G3778	G3361	G5463	G3754	G3588	G4151	G4771	G5293

χαίρετε	δὲ	ὅτι	τὰ	ὀνόματα	ὑμῶν	ἐνγέγραπται	ἐν	τοῖς	οὐρανοῖς.
आनन्द-करो	परन्तु	कि	–	नाम	तुम्हारे	लिखे-हुए-हैं	में	–	स्वर्गों
G5463	G1161	G3754	G3588	G3686	G4771	G1449	G1722	G3588	G3772

> किन्तु बस इसी बात पर प्रसन्न मत होओ कि आत्माएँ तुम्हारे बस में हैं, बल्कि इस पर प्रसन्न होओ कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में अंकित हैं।”

21	Ἐν	αὐτῇ	τῇ	ὥρᾳ,	ἠγαλλιάσατο	[ἐν]	τῷ	Πνεύματι	τῷ	Ἁγίῳ,	καὶ
	में	उसी	–	घड़ी	मगन-हुआ	में	–	आत्मा	–	पवित्र	और
	G1722	G0846	G3588	G5610	G0021	G1722	G3588	G4151	G3588	G0040	G2532

εἶπεν,	Ἐξομολογοῦμαί	σοι,	Πάτερ,	Κύριε	τοῦ	οὐρανοῦ	καὶ	τῆς	γῆς,	ὅτι
कहा	धन्यवाद-करता-हूँ	तुझे	पिता	प्रभु	-के	स्वर्ग	और	-की	पृथ्वी	कि
G3004	G1843	G4771	G3962	G2962	G3588	G3772	G2532	G3588	G1093	G3754

ἀπέκρυψας	ταῦτα	ἀπὸ	σοφῶν	καὶ	συνετῶν,	καὶ	ἀπεκάλυψας	αὐτὰ	νηπίοις;
छिपाया	ये-बातें	से	बुद्धिमानों	और	समझदारों	और	प्रकट-किया	उन्हें	बालकों-पर
G0613	G3778	G0575	G4680	G2532	G4908	G2532	G0601	G0846	G3516

ναί,	ὁ	Πατήρ,	ὅτι	οὕτως	εὐδοκία	ἐγένετο	ἔμπροσθέν	σου.
हाँ	–	पिता	क्योंकि	इस-प्रकार	भली-इच्छा	हुई	सामने	तेरे
G3483	G3588	G3962	G3754	G3779	G2107	G1096	G1715	G4771

> उसी क्षण वह पवित्र आत्मा में स्थित होकर आनन्दित हुआ और बोला, “हे परम पिता! हे स्वर्ग और धरती के प्रभु! मैं तेरी स्तुति करता हूँ कि तूमने इन बातों को चतुर और प्रतिभावान लोगों से छुपा कर रखते हुए भी बच्चों के लिये उन्हें प्रकट कर दिया। हे परम पिता! निश्चय ही तू ऐसा ही करना चाहता था।

22	πάντα	μοι	παρεδόθη	ὑπὸ	τοῦ	Πατρός	μου,	καὶ	οὐδεὶς	γινώσκει	τίς
	सब-कुछ	मुझे	सौंपा-गया-है	द्वारा	–	पिता	मेरे	और	कोई-नहीं	जानता	कौन
	G3956	G1473	G3860	G5259	G3588	G3962	G1473	G2532	G3762	G1097	G5101

ἐστιν	ὁ	Υἱὸς,	εἰ	μὴ	ὁ	Πατήρ;	καὶ	τίς	ἐστιν	ὁ	Πατὴρ,	εἰ
है	–	पुत्र	यदि	नहीं	–	पिता	और	कौन	है	–	पिता	यदि
G1510	G3588	G5207	G1487	G3361	G3588	G3962	G2532	G5101	G1510	G3588	G3962	G1487

μὴ	ὁ	Υἱὸς,	καὶ	ᾧ	ἐὰν	βούληται	ὁ	Υἱὸς	ἀποκαλύψαι.
नहीं	–	पुत्र	और	जिसे	कभी	चाहे	–	पुत्र	प्रकट-करना
G3361	G3588	G5207	G2532	G3739	G1437	G1014	G3588	G5207	G0601

> “मुझे मेरे पिता द्वारा सब कुछ दिया गया है और पिता के सिवाय कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है और पुत्र के अतिरिक्त कोई नहीं जानता कि पिता कौन है, या उसके सिवा जिसे पुत्र इसे प्रकट करना चाहता है।”

23	Καὶ	στραφεὶς	πρὸς	τοὺς	μαθητὰς	κατ’	ἰδίαν,	εἶπεν,	Μακάριοι	οἱ
	और	मुड़कर	की-ओर	–	चेलों	करके	अकेले-में	कहा	धन्य	वे
	G2532	G4762	G4314	G3588	G3101	G2596	G2398	G3004	G3107	G3588

ὀφθαλμοὶ	οἱ	βλέποντες	ἃ	βλέπετε!
आँखें	–	देखने-वाली	जो	देखती-हो
G3788	G3588	G0991	G3739	G0991

> फिर शिष्यों की तरफ़ मुड़कर उसने चुपके से कहा, “धन्य हैं, वे आँखें जो तुम देख रहे हो, उसे देखती हैं।

24	λέγω	γὰρ	ὑμῖν,	ὅτι	πολλοὶ	προφῆται	καὶ	βασιλεῖς	ἠθέλησαν	ἰδεῖν	ἃ
	कहता-हूँ	क्योंकि	तुमसे	कि	बहुत	भविष्यद्वक्ताओं	और	राजाओं-ने	चाहा	देखना	जो
	G3004	G1063	G4771	G3754	G4183	G4396	G2532	G0935	G2309	G3708	G3739

ὑμεῖς	βλέπετε,	καὶ	οὐκ	εἶδαν;	καὶ	ἀκοῦσαι	ἃ	ἀκούετε,	καὶ	οὐκ
तुम	देखते-हो	और	नहीं	देखा	और	सुनना	जो	सुनते-हो	और	नहीं
G4771	G0991	G2532	G3756	G3708	G2532	G0191	G3739	G0191	G2532	G3756

ἤκουσαν.
सुना
G0191

> क्योंकि मैं तुम्हें बताता हूँ कि उन बातों को बहुत से नबी और राजा देखना चाहते थे, जिन्हें तुम देख रहे हो, पर देख नहीं सके। जिन बातों को तुम सुन रहे हो, वे उन्हें सुनना चाहते थे, पर वे सुन न पाये।”

25	Καὶ	ἰδοὺ,	νομικός	τις	ἀνέστη,	ἐκπειράζων	αὐτὸν,	λέγων,	Διδάσκαλε,	τί
	और	देखो	व्यवस्थापक	कोई	उठा	परखता-हुआ	उसे	कहते-हुए	गुरु	क्या
	G2532	G3708	G3544	G5100	G0450	G1598	G0846	G3004	G1320	G5101

ποιήσας,	ζωὴν	αἰώνιον	κληρονομήσω?
करके	जीवन	अनन्त	पाऊँ
G4160	G2222	G0166	G2816

> तब एक न्यायशास्त्री खड़ा हुआ और यीशु की परीक्षा लेने के लिये उससे पूछा, “गुरु, अनन्त जीवन पाने के लिये मैं क्या करूँ?”

26	ὁ	δὲ	εἶπεν	πρὸς	αὐτόν,	Ἐν	τῷ	νόμῳ	τί	γέγραπται?	πῶς
	–ने	तो	कहा	से	उस	में	–	व्यवस्था	क्या	लिखा–है	कैसे
	G3588	G1161	G3004	G4314	G0846	G1722	G3588	G3551	G5101	G1125	G4459

ἀναγινώσκεις?
पढ़ता–है
G0314

> इस पर यीशु ने उससे कहा, “व्यवस्था के विधि में क्या लिखा है, वहाँ तू क्या पढ़ता है?”

27	ὁ	δὲ	ἀποκριθεὶς,	εἶπεν,	Ἀγαπήσεις	Κύριον	τὸν	Θεόν	σου,	ἐξ	ὅλης
	–ने	तो	उत्तर–देकर	कहा	प्रेम–करना	प्रभु	–	परमेश्वर	अपने–को	से	सारे
	G3588	G1161	G0611	G3004	G0025	G2962	G3588	G2316	G4771	G1537	G3650

τῆς	καρδίας	σου,	καὶ	ἐν	ὅλῃ	τῇ	ψυχῇ	σου,	καὶ	ἐν	ὅλῃ	τῇ
–	हृदय	अपने	और	में	सारे	–	प्राण	अपने	और	में	सारी	–
G3588	G2588	G4771	G2532	G1722	G3650	G3588	G5590	G4771	G2532	G1722	G3650	G3588

ἰσχύϊ	σου,	καὶ	ἐν	ὅλῃ	τῇ	διανοίᾳ	σου;	καὶ	τὸν	πλησίον	σου	ὡς
शक्ति	अपनी	और	में	सारी	–	बुद्धि	अपनी	और	–	पड़ोसी	अपने	जैसे
G2479	G4771	G2532	G1722	G3650	G3588	G1271	G4771	G2532	G3588	G4139	G4771	G5613

σεαυτόν.
अपने–आप–को
G4572

> उसने उत्तर दिया, “‘तू अपने सम्पूर्ण मन, सम्पूर्ण आत्मा, सम्पूर्ण शक्ति और सम्पूर्ण बुद्धि से अपने प्रभु से प्रेम कर।’ और ‘अपने पड़ोसी से वैसे ही प्यार कर, जैसे तू अपने आप से करता है।’”

28	εἶπεν	δὲ	αὐτῷ,	Ὀρθῶς	ἀπεκρίθης.	τοῦτο	ποίει,	καὶ	ζήσῃ.
	कहा	तो	उससे	ठीक	उत्तर–दिया	यह	कर	और	जीएगा
	G3004	G1161	G0846	G3723	G0611	G3778	G4160	G2532	G2198

> तब यीशु ने उस से कहा, “तू ने ठीक उत्तर दिया है। तो तू ऐसा ही कर इसी से तू जीवित रहेगा।”

29	ὁ	δὲ	θέλων	δικαιῶσαι	ἑαυτὸν,	εἶπεν	πρὸς	τὸν	Ἰησοῦν,	Καὶ	τίς
	–ने	परन्तु	चाहते–हुए	धर्मी–ठहराना	अपने–आप–को	कहा	से	–	यीशु	और	कौन
	G3588	G1161	G2309	G1344	G1438	G3004	G4314	G3588	G2424	G2532	G5101

ἐστίν	μου	πλησίον?
है	मेरा	पड़ोसी
G1510	G1473	G4139

> किन्तु उसने अपने को न्याय संगत ठहराने की इच्छा करते हुए यीशु से कहा, “और मेरा पड़ोसी कौन है?”

30	ὑπολαβὼν,	‹δὲ›	ὁ	Ἰησοῦς	εἶπεν,	Ἄνθρωπός	τις	κατέβαινεν	ἀπὸ
	उत्तर-लेकर	तो	-ने	यीशु	कहा	मनुष्य	कोई	उतर-रहा-था	से
	G5274	G1161	G3588	G2424	G3004	G0444	G5100	G2597	G0575

Ἰερουσαλὴμ	εἰς	Ἰεριχώ,	καὶ	λῃσταῖς	περιέπεσεν,	οἳ	καὶ	ἐκδύσαντες	αὐτὸν,
यरूशलेम	में	यरीहो	और	डाकुओं-में	पड़-गया	जिन्होंने	भी	उतारकर	उसे
G2419	G1519	G2410	G2532	G3027	G4045	G3739	G2532	G1562	G0846

καὶ	πληγὰς	ἐπιθέντες,	ἀπῆλθον,	ἀφέντες	ἡμιθανῆ.
और	घाव	लगाकर	चले-गए	छोड़कर	अधमरा
G2532	G4127	G2007	G0565	G0863	G2253

> यीशु ने उत्तर में कहा, “देखो, एक व्यक्ति यरूशलेम से यरीहो जा रहा था कि वह डाकुओं से घिर गया। उन्होंने सब कुछ छीन कर उसे नंगा कर दिया और मार पीट कर उसे अधमरा छोड़ कर वे चले गये।

31	κατὰ	συγκυρίαν	δὲ	ἱερεύς	τις	κατέβαινεν	ἐν	τῇ	ὁδῷ	ἐκείνῃ,	καὶ
	करके	संयोग-से	तो	याजक	कोई	उतर-रहा-था	में	–	मार्ग	उस	और
	G2596	G4795	G1161	G2409	G5100	G2597	G1722	G3588	G3598	G1565	G2532

ἰδὼν	αὐτὸν	ἀντιπαρῆλθεν;
देखकर	उसे	दूसरी-ओर-से-निकल-गया
G3708	G0846	G0492

> “अब संयोग से उसी मार्ग से एक याजक जा रहा था। जब उसने इसे देखा तो वह मुँह मोड़कर दूसरी ओर चला गया।

32	ὁμοίως	δὲ	καὶ	Λευίτης	[γενόμενος]	κατὰ	τὸν	τόπον,	ἐλθὼν	καὶ	ἰδὼν,
	उसी-प्रकार	तो	भी	लेवी	होकर	करके	–	स्थान	आकर	और	देखकर
	G3668	G1161	G2532	G3019	G1096	G2596	G3588	G5117	G2064	G2532	G3708

ἀντιπαρῆλθεν.
दूसरी-ओर-से-निकल-गया
G0492

> उसी रास्ते होता हुआ एक लेवी भी वहीं आया। उसने उसे देखा और वह भी मुँह मोड़कर दूसरी ओर चला गया।

33	Σαμαρίτης	δέ	τις	ὁδεύων	ἦλθεν	κατ’	αὐτὸν,	καὶ	ἰδὼν	ἐσπλαγχνίσθη,
	सामरी	परन्तु	कोई	यात्रा-करता-हुआ	आया	पास	उसके	और	देखकर	तरस-खाया
	G4541	G1161	G5100	G3593	G2064	G2596	G0846	G2532	G3708	G4697

> “किन्तु एक सामरी भी जाते हुए वहीं आया जहाँ वह पड़ा था। जब उसने उस व्यक्ति को देखा तो उसके लिये उसके मन में करुणा उपजी,

34	καὶ	προσελθὼν,	κατέδησεν	τὰ	τραύματα	αὐτοῦ,	ἐπιχέων	ἔλαιον	καὶ	οἶνον;
	और	पास-आकर	बाँधा	–	घावों-को	उसके	डालते-हुए	तेल	और	दाखरस
	G2532	G4334	G2611	G3588	G5134	G0846	G2022	G1637	G2532	G3631

ἐπιβιβάσας	δὲ	αὐτὸν	ἐπὶ	τὸ	ἴδιον	κτῆνος,	ἤγαγεν	αὐτὸν	εἰς	πανδοχεῖον,
चढ़ाकर	तो	उसे	पर	–	अपने	पशु	ले-गया	उसे	में	सराय
G1913	G1161	G0846	G1909	G3588	G2398	G2934	G0071	G0846	G1519	G3829

καὶ	ἐπεμελήθη	αὐτοῦ.
और	देखभाल-की	उसकी
G2532	G1959	G0846

> सो वह उसके पास आया और उसके घावों पर तेल और दाखरस डाल कर पट्टी बाँध दी। फिर वह उसे अपने पशु पर लाद कर एक सराय में ले गया और उसकी देखभाल करने लगा।

35	καὶ	ἐπὶ	τὴν	αὔριον,	ἐκβαλὼν	«δύο	δηνάρια»□,	ἔδωκεν	τῷ	πανδοχεῖ,	καὶ
	और	पर	–	दूसरे-दिन	निकालकर	दो	दीनार	दिया	-को	सराय-वाले	और
	G2532	G1909	G3588	G0839	G1544	G1417	G1220	G1325	G3588	G3830	G2532

εἶπεν,	Ἐπιμελήθητι	αὐτοῦ,	καὶ	ὅ	τι	ἂν	προσδαπανήσῃς,	ἐγὼ	ἐν	τῷ
कहा	देखभाल-कर	इसकी	और	जो	कुछ	भी	अधिक-खर्च-करे	मैं	में	–
G3004	G1959	G0846	G2532	G3739	G5100	G0302	G4325	G1473	G1722	G3588

ἐπανέρχεσθαί,	με	ἀποδώσω	σοι.
लौटने-पर	मेरे	चुका-दूँगा	तुझे
G1880	G1473	G0591	G4771

> अगले दिन उसने दो दीनारी निकाली और उन्हें सराय वाले को देते हुए बोला, ‘इसका ध्यान रखना और इससे अधिक जो कुछ तेरा खर्चा होगा, जब मैं लौटूँगा, तुझे चुका दूँगा।’”

36	τίς	τούτων	τῶν	τριῶν	πλησίον	δοκεῖ	σοι	γεγονέναι,	τοῦ	ἐμπεσόντος	εἰς
	कौन	इन	–	तीनों	पड़ोसी	लगता-है	तुझे	हुआ	-का	पड़े-हुए	में
	G5101	G3778	G3588	G5140	G4139	G1380	G4771	G1096	G3588	G1706	G1519

τοὺς	λῃστάς?
–	डाकुओं
G3588	G3027

> यीशु ने उससे कहा, “बता तेरे विचार से डाकुओं के बीच घिरे व्यक्ति का पड़ोसी इन तीनों में से कौन हुआ?”

37	ὁ	δὲ	εἶπεν,	Ὁ	ποιήσας	τὸ	ἔλεος	μετ’	αὐτοῦ.	εἶπεν	δὲ	αὐτῷ
	-ने	तो	कहा	-ने	किया	–	दया	के-साथ	उस	कहा	तो	उससे
	G3588	G1161	G3004	G3588	G4160	G3588	G1656	G3326	G0846	G3004	G1161	G0846

ὁ	Ἰησοῦς,	Πορεύου	καὶ	σὺ	ποίει	ὁμοίως.
-ने	यीशु	जा	और	तू	कर	उसी-प्रकार
G3588	G2424	G4198	G2532	G4771	G4160	G3668

> न्यायशास्त्री ने कहा, “वही जिसने उस पर दया की।” इस पर यीशु ने उससे कहा, “जा और वैसा ही कर जैसा उसने किया!”

38	Ἐν	δὲ	τῷ	πορεύεσθαι	αὐτοὺς,	αὐτὸς	εἰσῆλθεν	εἰς	κώμην	τινά;	γυνὴ
	में	तो	–	जाते-समय	उनके	वह-स्वयं	प्रवेश-किया	में	गाँव	किसी	स्त्री
	G1722	G1161	G3588	G4198	G0846	G0846	G1525	G1519	G2968	G5100	G1135

δέ	τις	ὀνόματι	Μάρθα,	ὑπεδέξατο	αὐτὸν	□εἰς	τὴν	οἰκίαν□.
तो	किसी	नाम	मार्था	स्वागत-किया	उसका	में	–	घर
G1161	G5100	G3686	G3136	G5264	G0846	G1519	G3588	G3614

> जब यीशु और उसके शिष्य अपनी राह चले जा रहे थे तो यीशु एक गाँव में पहुँचा। एक स्त्री ने, जिसका नाम मार्था था, उदारता के साथ उसका स्वागत सत्कार किया।

39	καὶ	τῇδε	ἦν	ἀδελφὴ	καλουμένη	Μαριάμ,	ἣ	καὶ	παρακαθεσθεῖσα	πρὸς
	और	इसकी	थी	बहन	जिसका-नाम-था	मरियम	जो	भी	बैठकर	पास
	G2532	G3592	G1510	G0079	G2564	G3137	G3739	G2532	G3869	G4314

τοὺς	πόδας	τοῦ	Κυρίου,	ἤκουεν	τὸν	λόγον	αὐτοῦ.
–	पैरों-के	-के	प्रभु	सुन-रही-थी	–	वचन	उसका
G3588	G4228	G3588	G2962	G0191	G3588	G3056	G0846

> उसकी मरियम नाम की एक बहन थी जो प्रभु के चरणों में बैठी, जो कुछ वह कह रहा था, उसे सुन रही थी।

40 ἡ δὲ Μάρθα περιεσπᾶτο περὶ πολλὴν διακονίαν; ἐπιστᾶσα δὲ, εἶπεν,
– परन्तु मार्था व्याकुल-थी से बहुत सेवा खड़ी-होकर तो कहा
G3588 G1161 G3136 G4049 G4012 G4183 G1248 G2186 G1161 G3004

Κύριε, οὐ μέλει σοι, ὅτι ἡ ἀδελφή μου μόνην με κατέλειπεν
प्रभु नहीं चिन्ता तुझे कि -ने बहन मेरी अकेली मुझे छोड़-दिया
G2962 G3756 G3199 G4771 G3754 G3588 G0079 G1473 G3441 G1473 G2641

διακονεῖν? εἰπὲ οὖν αὐτῇ ἵνα μοι συναντιλάβηται!
सेवा-करने-को कह इसलिए उसे कि मेरी सहायता-करे
G1247 G3004 G3767 G0846 G2443 G1473 G4878

> उधर तरह तरह की तैयारियों में लगी मार्था व्याकुल होकर यीशु के पास आयी और बोली, “हे प्रभु, क्या तुझे चिंता नहीं है कि मेरी बहन ने सारा काम बस मुझ ही पर डाल दिया है? इसलिए उससे मेरी सहायता करने को कह।”

41 ἀποκριθεὶς δὲ, εἶπεν αὐτῇ ὁ Κύριος, Μάρθα, Μάρθα, μεριμνᾷς καὶ
उत्तर-देकर तो कहा उससे -ने प्रभु मार्था मार्था चिन्तित-है और
G0611 G1161 G3004 G0846 G3588 G2962 G3136 G3136 G3309 G2532

θορυβάζῃ περὶ πολλά;
व्याकुल-है से बहुत-बातों
G2350 G4012 G4183

> प्रभु ने उसे उत्तर दिया, “मार्था, हे मार्था, तू बहुत सी बातों के लिये चिंतित और व्याकुल रहती है।

42 ὀλίγων δέ ἐστιν χρεία; ἢ ἑνός Μαριὰμ γὰρ τὴν ἀγαθὴν μερίδα
थोड़े-की परन्तु है आवश्यकता या एक-की मरियम-ने क्योंकि – उत्तम भाग
G3641 G1161 G1510 G5532 G2228 G1520 G3137 G1063 G3588 G0018 G3310

ἐξελέξατο, ἥτις οὐκ ἀφαιρεθήσεται αὐτῆς.
चुन-लिया-है जो नहीं छीना-जाएगा उससे
G1586 G3748 G3756 G0851 G0846

> किन्तु बस एक ही बात आवश्यक है, और मरियम ने क्योंकि अपने लिये उसी उत्तम अंश को चुन लिया है, सो वह उससे नहीं छीना जायेगा।”